नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सत्र 2023-24 से पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित किया गया है। यह संजीव पास बुक्स पूर्णतः नवीन पुनर्संयोजित पाठ्यपुस्तक पर आधारित है।

पास बुक्स में नं. 1

संजीव®

पास बुक्स

चित्रकला-XII

भारतीय कला का परिचय : भाग-2

(कक्षा 12 के विद्यार्थियों के लिए नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार)

- माध्य. शिक्षा बोर्ड मॉडल पेपर 2022-23 एवं बोर्ड पेपर 2023 के प्रश्नों का अन्दर समावेश
- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

2024

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 340/-

- प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन

धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,

जयपुर-3

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

- © प्रकाशकाधीन

- **मूल्य : ₹ 340.00**

- लेजर कम्पोजिंग :

संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

- मुद्रक :

मनोहर आर्ट प्रिन्टर्स, जयपुर

****

❖ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।

❖ इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।

❖ सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

विषय-सूची

1. पाण्डुलिपि चित्रकला की परम्परा 1-13
(The Manuscript Painting Tradition)
2. राजस्थानी चित्रकला शैली 14-68
(The Rajasthani Schools of Painting)
3. मुगलकालीन लघु चित्रकला 69-108
(The Mughal School of Miniature Painting)
4. दक्खिनी चित्रकला शैली 109-138
(The Deccani Schools of Painting)
5. पहाड़ी चित्रकला शैली 139-177
(The Pahari Schools of Painting)
6. बंगाल स्कूल और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद 178-212
(The Bengal School and Cultural Nationalism)
7. आधुनिक भारतीय कला 213-255
(The Modern Indian Art)
8. भारत की जीवन्त कला परम्पराएँ 256-280
(The Living Art Traditions of India)

◆◆◆

ये हम नहीं कहते,

जमाना कहता है

संजीव पास बुक्स है नं. 1

दैनिक भास्कर

जयपुर, 12 जुलाई, 2022

राजस्थान का प्रमुख दैनिक

सफलता का पर्याय बनीं संजीव पास बुक्स

जयपुर। लंबे समय से संजीव पास बुक्स अपनी उच्च गुणवत्तायुक्त पाठ्यसामग्री, नवीनतम घटनाक्रम, प्रमाणित आँकड़ों तथा सरल भाषा के कारण विद्यार्थियो में सर्वाधिक लोकप्रिय बनी हुई है। लाखों विद्यार्थी संजीव पास बुक्स से अध्ययन कर सफलता अर्जित कर रहे हैं। स्कूल स्तर के विद्यार्थियों के लिए कक्षा 3 से 9 के लिए संजीव आल इन वन, कक्षा 9 से 12 के लिए अलग-अलग विषय पर संजीव पास बुक्स अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए कक्षा 5 से 8 के लिए संजीव रिफ्रेशर आल इन वन, कक्षा 9 से 12 के लिए अलग-अलग विषय पर संजीव रिफ्रेशर प्रकाशित की जाती हैं। कॉलेज स्तर पर भी राजस्थान के सभी प्रमुख विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमानुसार प्रथम वर्ष से एम.ए. तक के लिए संजीव पास बुक्स प्रकाशित की जाती हैं। संजीव प्रकाशन के निदेशक प्रदीप मित्तल एवं मनोज मित्तल के अनुसार संजीव पास बुक्स सहित अन्य सभी पुस्तकें पूर्णतः नवीनतम पाठ्यपुस्तकों एवं नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार तैयार कराई जाती हैं।

राजस्थान पत्रिका

जयपुर, 7 जुलाई, 2022

राजस्थान का प्रमुख दैनिक

विद्यार्थियों के लिए उपयोगी बनी संजीव पास बुक्स

जयपुर। संजीव पास बुक्स अपनी पाठ्यसामग्री, नवीनतम घटनाक्रम और सरल भाषा के चलते विद्यार्थियों के लिए उपयोगी साबित हो रही है। संजीव प्रकाशन के निदेशक प्रदीप मित्तल एवं मनोज मित्तल का कहना है कि हमारी पुस्तकें नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार तैयार कराई जाती है, जिसमें अनुभवी विशेषज्ञों का योगदान होता है। साथ ही समय-समय पर इन्हें अपडेट भी किया जाता है, इससे सहायक पुस्तकों के रूप में विद्यार्थियों के लिए ये बहुत उपयोगी हो जाती है। गौरतलब है कि संजीव पासबुक्स, संजीव इंग्लिश कोर्स, संजीव साइंस पुस्तकें, रिफ्रेशर आदि पुस्तकों की कक्षा 3 से एम.ए. तक के छात्रों के बीच अच्छी डिमांड है।

संजीव पास बुक्स कक्षा 3 से एम. ए. के लिए

प्रकाशक—संजीव प्रकाशन, जयपुर-3

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2023

चित्रकला

(DRAWING)

समय : 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 24**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

General Instructions to the Examinees :

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
   Candidate must write first his/her Roll No. on the question paper compulsorily.
2. **सभी** प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
   All the questions are compulsory.
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
   Write the answer to each question in the given answer-book only.
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
   For questions having more than one part, the answers to those parts are to be written together in continuity.
5. प्रश्न-पत्र के हिन्दी व अंग्रेजी रूपान्तर में किसी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही मानें।
   If there is any error/difference/contradiction in Hindi & English versions of the question paper, the question of Hindi version should be treated valid.
6. प्रश्न संख्या 17 एवं 18 में आन्तरिक विकल्प हैं।
   There are Internal choice in Q. No. 17 & 18.
7. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
   Write down the serial number of the question before attempting it.

खण्ड-अ (Section-A)

1. नीचे दिये गये बहुविकल्पीय प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कर उत्तर-पुस्तिका में लिखिए :
   Write the correct answer to the given multiple choice questions in the answer booklet :

   (i) 'कल्पसूत्र' किस धर्म से संबंधित है? [$^1/_2$]
   (अ) जैन धर्म (ब) बौद्ध धर्म (स) मुस्लिम धर्म (द) पारसी धर्म
   Kalpsutra belongs to which religion?
   (A) Jain Religion (B) Bodh Religion
   (C) Muslim Religion (D) Paarsi Religion

   (ii) 'बनी ठनी' कृति किसने चित्रित की थी? [$^1/_2$]
   (अ) निहाल चन्द (ब) करम चन्द (स) बाल चन्द (द) डाल चन्द
   Who painted – 'Bani-Thani'.
   (A) Nihal Chand (B) Karam Chand (C) Bal Chand (D) Dal Chand

   (iii) 'मेडोना एण्ड चाइल्ड' कृति किसने चित्रित की थी? [$^1/_2$]
   (अ) तपोवन (ब) बसावन (स) देवदत्त (द) डेविड
   Who painted the painting – 'Madonna and Child'?
   (A) Tapowan (B) Basawan (C) Dev Dutt (D) David

(iv) 'जहाँगीर का सपना' कृति किसने चित्रित की थी? [1/2]

(अ) जेनुअल अबादीन (ब) अबुल हसन

(स) हुसैन (द) जलालुद्दीन

Who painted the painting – 'Jahangir's Dream'?

(A) Jenual Abadeen (B) Abul Hasan

(C) Hussain (D) Jalaluddin

(v) नुजूम - अल - उलूम किस शैली से संबंधित है? [1/2]

(अ) बीजापुर चित्रकला शैली (ब) नगर अहमद शैली

(स) मुगल शैली (द) ईरानी शैली

Nujum - al - Ulum belongs to which school?

(A) Bijapur Painting School (B) Nagar Ahmad School

(C) Mughal School (D) Irani School

(vi) नैनसुख और मानक (मनकू) किस शैली से संबंधित है? [1/2]

(अ) राजस्थानी शैली (ब) जैन शैली (स) मुगल शैली (द) गुलेर शैली

Nainsukh and Manak (Manku) belongs to which school?

(A) Rajasthani School (B) Jain School (C) Mughal School (D) Guler School

2. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

Fill in the blanks in the following sentences :

(i) गीत गोविन्द के लेखक .... थे। [1/2]

.... was the author of Gita Govind.

(ii) 'पक्षी विश्राम पर बाज' कृति .... ने बनाई थी? [1/2]

'The Falcon on bird rest' was painted by ....

(iii) वरली पेंटिंग्स का संबंध .... राज्य से है। [1/2]

Warli painting belongs to .... state.

(iv) 'मदर टेरेसा' .... की प्रसिद्ध कृति है। [1/2]

Mother Teresa is a famous painting of ....

3. निम्नलिखित अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति में लिखिए :

Answer the following very short answer type questions in **one** line :

(i) 'रागमाला' चित्रण क्या है? [1/2]

What is 'Ragamala' painting?

(ii) 'रामायण का युद्ध काण्ड' किसने चित्रित किया था? [1/2]

Who painted – 'Yuddha Kanda of Ramayan'?

(iii) 'तारीफ-ए-हुसैन शाही'-सिंहासन पर बैठे राजा किस शैली से संबंधित है? [1/2]

Tarif-i-Hussain Shahi : King sitting on the Throne is belongs to which school?

(iv) 'एक बगीचे में कवि' कृति शैली से संबंधित है। [1/2]

'Poet in a Garden' painting belongs to which school?

(v) काँगड़ा शैली में चित्रों के कोई दो विषय लिखिए। [1/2]

Write any two subjects of paintings in Kangra School.

(vi) जेमिनी रॉय की कृति – 'ब्लैक हॉर्स' की दो विशेषताएँ लिखिए। [$^{1}/_{2}$]

Write the two characteristics of Jamini Roy's painting – 'Black Horse'.

खण्ड-ब (Section-B)

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर अधिकतम 40 शब्दों में लिखिए :

Write the answer of the following short answer type questions in maximum **40** words :

4. पाल चित्र शैली की विशेषताएँ लिखिए। [$^{3}/_{4}$]

Write the characteristics of Pala school of painting.

5. 'संग्राहिणी सूत्र' में किसका वर्णन है? [$^{3}/_{4}$]

What is described in the 'Sangrahini Sutra'?

6. अकबर कालीन मुगल कला के बारे में आप क्या समझते हैं? [$^{3}/_{4}$]

What do you understand about Akbar's period Mughal art?

7. जहाँगीर कालीन किसी एक प्रसिद्ध कृति के बारे में लिखिए। [$^{3}/_{4}$]

Write about any one famous painting of Jahangir's period.

8. 'संयोजित घोड़ा' से आप क्या समझते हैं? [$^{3}/_{4}$]

What do you understand by 'Composite Horse'?

9. 'पोलो खेलते हुए चाँद बीबी' चित्र के बारे में संक्षेप में लिखिए। [$^{3}/_{4}$]

Write in brief about the painting – 'Chand Bibi playing Polo'.

10. 'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप ऑफ बॉम्बे' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। [$^{3}/_{4}$]

Write a short note on the 'Progressive Artists Group of Mumbai'.

11. 'ट्राइम्फ ऑफ लेबर' से आप क्या समझते हैं? [$^{3}/_{4}$]

What do you understand by 'Triumph of labour'?

12. चुगताई की प्रसिद्ध कृति 'राधिका' पर प्रकाश डालिए। [$^{3}/_{4}$]

High light the Chugtai's famous painting 'Radhika'.

13. 'जर्नीस एण्ड' क्या है? [$^{3}/_{4}$]

What is 'Journeys End'?

खण्ड-स (Section-C)

निम्नलिखित दीर्घउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर लगभग 150 शब्दों में लिखिए :

Write the answer of the following long answer type questions approx in **150** words :

14. काँगड़ा शैली में चित्रित 'नायिका भेद' से आप क्या समझते हैं? [$1^{1}/_{2}$]

What do you understand by 'Nayika Bhed'?

15. 'राम वैंक्विशिंग द प्राइड ऑफ द ओशन' के बारे में विस्तार से लिखिए। [$1^{1}/_{2}$]

Write in detail about the painting – 'Rama Vanquishing the pride of the Ocean'.

16. 'भारतीय कला में आधुनिकता' से आप क्या समझते हैं? [$1^{1}/_{2}$]

What do you understand by 'Modernism in Indian Painting'?

खण्ड-द (Section-D)

निम्न निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में लिखिए :

Answer the following essay type questions approx. in **250** words :

17. जोधपुर चित्रकला शैली की विस्तृत व्याख्या कीजिए। [2]

Describe in detail the Jodhpur School of Painting.

अथवा/OR

जयपुर चित्रकला शैली की विस्तृत व्याख्या कीजिए।

Describe in detail the Jaipur School of Painting.

18. 'मिथिला कला' से आप क्या समझते हैं? [2]

What do you understand by 'Mithila Art'?

अथवा/OR

'वरली चित्रकला' से आप क्या समझते हैं?

What do you understand by 'Warli Painting'?

चित्रकला–कक्षा 12

1. पांडुलिपि चित्रकला की परम्परा
(The Manuscript Painting Tradition)

पाठ परिचय

विष्णुधर्मोत्तर पुराण का 'चित्रसूत्र' अध्याय भारतीय चित्रकला का स्रोत–

पाँचवीं शताब्दी में रचित 'विष्णुधर्मोत्तर पुराण' के तृतीय खण्ड, में चित्रसूत्र नामक एक अध्याय है, जिसे सामान्यत: भारतीय कला और विशेषत: चित्रकला की स्रोत पुस्तक के रूप में स्वीकार किया गया है। यह अध्याय आकृति बनाने की कला से संबंधित है जिसे 'प्रतिमा लक्षण' कहते हैं। जो कि चित्रकला के धर्मसूत्र हैं। इसमें मानव आकृति की त्रि-आयामिता (विस्तार, लम्बाई, चौड़ाई) की संरचना, परिप्रेक्ष्य, तकनीक, उपकरण, सामग्री, सतह (दीवार) तथा धारणा का उल्लेख किया गया है। यह चित्रण के विभिन्न अंगों, जैसे–रूपभेद (roopbheda) या बाहरी स्वरूप, प्रमाण या परिमाप, अनुपात और संरचना; भाव या अभिव्यंजना, लावण्य योजना या सौन्दर्य रचना, सादृश्यता या समरूपता; और वर्णिकाभंग या रंगों और ब्रुश के उपयोग की बहुत विस्तार से उदाहरणों सहित व्याख्या करता है। इनमें प्रत्येक के अनेक उप खण्ड हैं। कई शताब्दियों से इन धर्मसूत्रों को कलाकारों द्वारा पढ़ा, समझा और अनुसरण किया जाता रहा है। इस प्रकार से यह भारत में चित्रकला की सभी भारतीय शैलियों एवं चित्रशालाओं का आधार बना रहा है।

लघु चित्रकारी–

मध्यकाल की चित्रकला को उनके अपेक्षाकृत छोटे आकार के कारण लघु चित्रकारी के नाम से जाना गया। अपने छोटे आकार के कारण इन लघु चित्रों को हाथ में लेकर निकट से अवलोकन किया जाता था। कला संरक्षकों के महलों या राजदरबारों की दीवारों को भित्ति चित्रों से सजाया जाता था। इसलिए इन लघु चित्रों का उद्देश्य कभी भी दीवारों पर प्रदर्शित करना नहीं होता था।

पाण्डुलिपि चित्रकला–

चित्रकला का एक बड़ा वर्ग पांडुलिपि चित्रण के नाम से जाना जाता है जिनमें महाकाव्यों के काव्य छंदों और विभिन्न विहित, साहित्यिक, संगीत ग्रंथों (पांडुलिपियों) का चित्रण किया गया है। चित्रपट के शीर्ष भाग पर हस्तलिखित छंद को स्पष्ट रूप से सीमांकित आयताकार स्थानों में लिखा जाता था। कभी-कभी विषयवस्तु को लेखचित्र के मुख्य पृष्ठ पर न लिखकर पीछे की तरफ लिखा जाता था।

पाण्डुलिपि चित्रण को व्यवस्थित रूप से विषयवस्तु के अनुसार विभिन्न भागों में रचित किया गया था (प्रत्येक समूह में विभिन्न प्रकार के बंधनमुक्त कई चित्र या ग्रन्थ समाहित होते थे)। चित्र के प्रत्येक पृष्ठ का अपना एक संगत मूल-पाठ (Text) है जिसे या तो चित्र के ऊपरी हिस्से में सीमांकित स्थान पर या इसके पृष्ठ में उकेरा गया था। इस प्रकार से प्रत्येक समूह में रामायण या भागवत पुराण, या महाभारत, या गीत गोविन्द, रागमाला इत्यादि के चित्रों का संकलन होगा। प्रत्येक समूह को कपड़े के एक टुकड़े में लपेटकर राजा या संरक्षक के पुस्तकालय में एक पोटली के रूप में संग्रहित किया जाता था।

कॉलफॅन (पुष्पिका) पृष्ठ (Colophon Page)–

संग्रह का सबसे महत्त्वपूर्ण पर्ण-पृष्ठ कॉलफॅन (पुष्पिका) का पृष्ठ होता है, जिस पर संरक्षक के नाम की जानकारी, कलाकार या लेखक, संगठन या कार्य के पूर्ण होने की तिथि और संग्रह बनाने का स्थान एवं अन्य महत्त्वपूर्ण विवरण लिखा जाता था।

यद्यपि समय के प्रकोपों के कारण कॉलफॅन (पुष्पिका) पृष्ठ प्राय: गुम या नष्ट हो गए हैं और अपने उद्यम या संगठन के कहने पर कला-विद्वानों ने इनका विवरण इनकी विशेषता के आधार पर किया है।

चित्रकला किसी भी तरह की आपदाओं, जैसे–आग, नमी और अन्य आपदाओं के प्रति अतिसंवेदनशील होती है। फलत: लघु चित्रों को कला का बहुमूल्य एवं कीमती रूप माना गया है एवं इन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना भी सुगम था। इन चित्रों को प्राय: राजकुमारियों को उनके विवाह के समय भेंट के रूप में उपहार में दिया जाता था। इन्हें आभार के स्वरूप में राजाओं एवं दरबारियों के मध्य उपहार के रूप में भी आदान-प्रदान बड़े व्यापक और व्यावहारिक रूप में किया जाता था और सुदूर स्थानों पर इनका व्यापार किया जाता था। ये चित्र तीर्थयात्रियों, साधु-सन्तों, साहसिक खोजकर्ता, व्यापारियों और पेशेवर कथावाचक के साथ सुदूरवर्ती क्षेत्रों में ले जाए जाते थे। इस प्रकार, उदाहरणार्थ, मेवाड़ के चित्रों का संग्रह बूँदी के राजा के यहाँ या उसी प्रकार से बूँदी के चित्र मेवाड़ के राजा के यहाँ मिल सकते थे।

चित्रकलाओं के इतिहास का पुनर्निर्माण (Reconstructing the History of Paintings)–

चित्रकलाओं के इतिहास का पुनर्निर्माण एक अभूतपूर्व कार्य है। दिनांकित की तुलना में अदिनांकित कलाकृतियाँ कम हैं। अगर इन सभी को क्रमानुसार व्यवस्थित किया जाए तो इनके बीच कुछ खाली स्थान रह जाते हैं जहाँ पर किसी के भी द्वारा चित्रण के विकास या गतिविधि का अंदाज लगाया जा सकता है। स्थिति की जटिलता तब अधिक बढ़ जाती है, जब ये बिखरे पृष्ठ अपने मूल भाग का हिस्सा न रहकर विभिन्न संग्रहालयों और निजी संग्रहों में बिखर गए, जो इधर-उधर समय-समय पर देखने को मिलते हैं। ये परिभाषित समय को चुनौती देते हैं और विद्वानों को पुन: कालक्रम में संशोधन करने और उसे पुनर्परिभाषित करने के लिए विवश करते हैं। इस प्रकार अदिनांकित चित्रकलाओं के समूहों को उनकी शैली के आधार पर और अन्य परिस्थितिजन्य साक्ष्यों के आधार पर वर्गीकृत किया जाता रहा है।

पश्चिमी भारतीय चित्रकला शैली
(Western Indian School of Painting)

चित्रकला की जो शैली भारत के पश्चिमी भाग में बड़े रूप में फली-फूली, उसे पश्चिमी भारतीय चित्रकला के नाम से जाना जाता है। इस शैली का प्रमुख केन्द्र गुजरात है, इसमें अन्य केन्द्रों के रूप में राजस्थान का दक्षिणी भाग और मध्य भारत का पश्चिमी भाग भी सम्मिलित है। गुजरात में अनेक प्रमुख बन्दरगाहों के होने के कारण इस क्षेत्र से गुजरने वाले व्यावसायिक मार्गों का एक जाल है जिसमें वहाँ के स्थानीय सामन्त, सौदागर और व्यापारी व्यापार से अर्जित अपनी धन-सम्पदा और समृद्धि के कारण कला के सशक्त संरक्षक बन गये थे।

जैन चित्रकला–मुख्य रूप से जैन-समुदाय के व्यापारी वर्ग ने जैन धर्म के विषयों को संरक्षित किया। जैन विषयों और पांडुलिपियों पर आधारित पश्चिम भारतीय शैली का यह भाग जैन चित्रकला के नाम से जाना जाता है।

जैन चित्रों को शास्त्र दान की परंपरा से जैन शैली के विकास को और प्रोत्साहन मिला क्योंकि इस समुदाय में प्रचलित शास्त्रदान (पुस्तकों को दान देना) की अवधारणा ने इसका समर्थन किया, जहाँ सचित्र पांडुलिपि को मठों की लाइब्रेरी, जिसे भण्डार कहा जाता था, में दान देने के कार्य को एक परोपकार, सदाचार और धार्मिक कृत्य के भाव के रूप में महिमामंडित किया जाता था।

जैन परम्परा के निम्नलिखित प्रमुख ग्रन्थ हैं जिनमें जैन शैली के चित्र चित्रित किये गये हैं–

(1) कल्पसूत्र (Kalpasutra)–जैन परम्परा में कल्पसूत्र को सर्वाधिक लोकप्रिय चित्र-ग्रंथ माना गया है। इसके एक भाग में 24 तीर्थंकरों के जन्म से लेकर निर्वाण तक की विविध घटनाओं को गाते हुए बताया गया है। जो कि कलाकारों को उनके जीवन चरित्र को चित्रित करने हेतु सामग्री उपलब्ध करता है। कल्पसूत्र के अधिकांश भाग में तीर्थंकरों के जीवन और उनके द्वारा नेतृत्व की गई व उनके इर्द-गिर्द घटी पाँच प्रमुख घटनाओं को विस्तृत रूप में बताया गया है, वे हैं–गर्भाधान, जन्म, गृह त्याग, प्रबोधन (ज्ञान प्राप्ति) व प्रथम उपदेश और महानिर्वाण।

(2) कालकाचार्यकथा (Kalakacharyakatha)–अन्य दूसरे लोकप्रिय चित्रित-ग्रन्थों में प्रमुख हैं–कालकाचार्यकथा और संग्राहिणी सूत्र। कालकाचार्यकथा में आचार्य कालक की कथा का वर्णन है। जिसमें कालक

अपनी अपहृत बहन जो कि एक जैन साध्वी है, को एक दुष्ट राजा से बचाने के अभियान पर है। यह कालक की विभिन्न रोमांचपूर्ण यात्रा और साहसी घटनाओं के बारे में बताता है, जैसे-अपनी लापता बहन का पता लगाने हेतु जमीन का शुद्धिकरण करना, अपनी जादुई शक्तियों का प्रदर्शन करना, अन्य राजाओं के साथ सम्बन्ध स्थापित करते हुए अन्ततः दुष्ट राजा से युद्ध करना।

(3) उत्तरध्यान सूत्र (Uttaradhyana Sutra)–उत्तरध्यान सूत्र में महावीर स्वामी की शिक्षाएँ लिखी हुई हैं जहाँ भिक्षुओं के आचार संहिता का पालन करने का वर्णन किया गया है।

(4) संग्राहिणी सूत्र (Sangrahini Sutra)–संग्राहिणी सूत्र एक ब्रह्माण्ड सम्बन्धी ग्रंथ है जिसे 12वीं शताब्दी में लिखा गया था। इसमें ब्रह्माण्ड की संरचना एवं अन्तरिक्ष के बारे में अवधारणाएँ विद्यमान हैं।

जैनियों के द्वारा इन सभी ग्रंथों की अनेक प्रतियाँ लिखवाई गईं। इनमें या तो कम या बहुत अधिक चित्र मिलते हैं। एक विशिष्ट चित्र या पृष्ठ पोथी को लेखन और चित्रण के लिए विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जाता था।

पटलिस (Patlis)—पांडुलिपि या पोथी चित्र के पृष्ठों को एक साथ जोड़ने के लिए ऊपर और नीचे पटलिस नामक लकड़ी के आवरण का उपयोग किया जाता था और जोड़ने के लिए एक छोटा सा छेद बनाया जाता था जिससे उसे एक डोर के द्वारा बांध दिया जाता था ताकि वे संरक्षित रहें।

ताड़ की पत्तियों पर चित्रित जैन चित्र–प्रारम्भिक जैन चित्रकला कागज के आगमन से पूर्व ताड़ की पत्तियों पर पारम्परिक रूप से बनाई जाती थी। कागज 14वीं शताब्दी में आया था और भारत के पश्चिमी क्षेत्र से प्राप्त सबसे पुरानी ताड़ के पत्तों की पाण्डुलिपि 11वीं शताब्दी की है। ताड़ की पत्तियों को चित्र बनाने से पूर्व ठीक प्रकार से तैयार किया जाता था एवं एक तीखी सुलेख लिखने वाली लेखनी से उन पर कुशलता के साथ शब्दों को लिखा जाता था।

ताड़ की पत्तियों के संकरे एवं छोटे स्थान के कारण आरंभ में चित्रण मात्र 'पटलिस' तक ही सीमित था जिन पर चमकदार रंगों में देवी और देवताओं के चित्र बनाये जाते थे और जैन आचार्यों के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं का चित्रण किया जाता था।

जैन चित्र शैली की विभिन्न विशेषताएँ–जैन चित्रकला में विशेष प्रकार की सरलीकृत एवं योजनाबद्ध भाषा का विकास हुआ। प्रायः चित्रों में विभिन्न प्रकार की घटनाओं को समाहित करने के लिए चित्रपटल को विभिन्न वर्गों में विभाजित किया गया। चित्रों में चमकीले रंग और कपड़े के अलंकरण का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। संयोजन में पतली रेखाएँ प्रबल प्रभुत्व लिए हुए हैं एवं चेहरे को त्रिआयामी बनाने के प्रयास में एक अतिरिक्त आँख आगे की ओर जोड़ी गई है। जहाँ पर ये चित्र बनाए गए हैं वहाँ की स्थापत्य कला के तत्व, जैसे-सल्तनत काल के मकबरे और ऊँचे गुम्बद आदि गुजरात, माण्डु, जौनपुर, पाटन के साथ अन्य क्षेत्रों में सुल्तानों की राजनीतिक उपस्थिति का संकेत देते हैं। वस्त्र के शामियानों और पर्दों, मेज, कुर्सी, वेशभूषा, उपयोगी वस्तुओं आदि पर टंगे चित्रों की स्वदेशी विशेषता और स्थानीय सांस्कृतिक जीवन शैली के प्रभाव दृष्टिगोचर होते हैं। भू-भाग की विशेषताएँ केवल सांकेतिक हैं और सामान्यतः इन्हें विस्तृत रूप में नहीं दिखाया गया है। जैन चित्रकला का लगभग 1350-1450 का सौ वर्षों का काल सर्वाधिक रचनात्मक काल माना जाता है। चित्रों की संरचना में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन का अनुभव किया जा सकता है, जहाँ प्रबल रूप से देवी-देवताओं के साथ आकर्षक रूप से चित्रित किए गए भू-दृश्य, नृत्य करती मानव आकृतियाँ और विभिन्न वाद्य यंत्रों को बजाते हुए संगीतकारों का चित्रण मुख्य चित्र के हाशिये पर किया गया है।

इन चित्रों में अत्यधिक रूप से स्वर्ण का उपयोग करते हुए मूल्यवान नीले रंग के पत्थर (लाजवर्त) का प्रयोग किया गया है, जो अपने संरक्षकों की संपन्नता तथा सामाजिक प्रतिष्ठा को दर्शाता है।

इन चित्रों में धार्मिक ग्रंथों के अतिरिक्त तीर्थीपक, मण्डल और गैर धार्मिक कहानियों को भी जैन समुदाय के लिए चित्रित किया जाता था।

व्यापारियों के अतिरिक्त सामन्तों के मध्य चित्र परम्परा–जैन चित्रों के अतिरिक्त इनका निर्माण या संरक्षण धनी व्यापारियों एवं समर्पित भक्तों द्वारा करवाया जाता था। 15वीं और 16वीं शताब्दियों के उत्तरार्द्ध के दौरान सामन्तों, जमींदारों, धनी नागरिकों और ऐसे अन्य लोगों के मध्य चित्रों की एक समानान्तर परम्परा भी विद्यमान थी। जिसने धर्मनिरपेक्ष, धार्मिक तथा साहित्यिक विषयवस्तुओं पर बने चित्रण को अपने आवरण में

लपेटा था। यह चित्रकला स्वदेशी परम्परा का प्रतिनिधित्व करती है जिसका निर्माण राजस्थान के राजदरबार की शैलियों और मुगलों के प्रभाव के आने से पहले हुआ था।

स्वदेशी चित्रकला शैली–इसी समय में हिन्दू और जैन विषयों के अनेक चित्रों को चित्रित किया गया, जैसे–महापुराण, चारुपंचशिखा, महाभारत का आरण्यक पर्व, भागवत पुराण, गीत गोविन्द आदि, जो इस स्वदेशी शैली का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस समयावधि के चित्रों की शैली को मुगल पूर्व या पूर्व-राजस्थानी शैली के रूप में जाना जाता है, जिसे 'स्वदेशी शैली' भी कहा जा सकता है।

विशिष्ट कलात्मक विशेषताएँ (Distinctive Stylistic Features)

इसी काल के दौरान इन चित्रों के समूह में एक विशिष्ट शैलीगत विशिष्टताओं का विकास हुआ। इनमें मानव संरचना की एक विशेष शैली का विकास देखने को मिलता है, साथ ही साथ पारदर्शी वस्त्रों के चित्रण में विशिष्ट रुचि दृष्टिगोचर होती है। इसमें नायिका के सिर पर ओढ़नी गुब्बारे की तरह फूलती हुई है जिसके किनारे सख्त और नुकीले स्वरूप में थे। वास्तुकला प्रासंगिक एवं सांकेतिक है। जल निकायों और क्षितिज, वनस्पति, जीव इत्यादि की विशिष्ट तरीकों से प्रस्तुतीकरण की विभिन्न प्रकार की छाया रेखाओं को अपनाया गया। इन सभी औपचारिक तत्त्वों ने 17वीं शताब्दी की प्रारंभिक राजस्थानी चित्रकला को प्रभावित किया।

उत्तर, पूर्व और पश्चिम में कई क्षेत्रों पर 12वीं शताब्दी के अन्त में मध्य एशिया के कई सल्तनत वंशों के शासन में आने के बाद स्पष्टतः फारसी, तुर्की और अफगानी प्रभाव को चित्रों में देखा जा सकता है। यह प्रभाव मालवा, गुजरात, जौनपुर और अन्य केन्द्रों के संरक्षित चित्रों में दृष्टिगोचर होने लगा था। इन राजदरबारों में कुछ मध्य एशियाई कलाकार जो कि वहाँ के स्थानीय कलाकारों के साथ कार्य करते थे, इनके चित्रों में स्वदेशी कला की शैली के साथ फारसी विशेषताएँ आपस में मिल गईं एवं एक नवीन शैली का प्रादुर्भाव हुआ जिसे **सल्तनत चित्रकला** (Sultanate school of painting) के रूप में जाना जाता है।

यह एक चित्र-शैली की तुलना में पद्धति का अधिक प्रतिनिधित्व करता है जिसमें स्वदेशी शैली पर फारसी मिश्रण का प्रभाव है। स्वदेशी विशेषता के साथ इसमें फारसी विशेषताएँ मिल गईं हैं। इन विशेषताओं में रंग, शरीर रचना, अलंकरण सूक्ष्मता के साथ सरलीकृत भू-दृश्य इत्यादि शामिल हैं।

'निमतनामा' पुस्तक (पकवानों की किताब) में चित्रित चित्र–'निमतनामा' नामक पुस्तक इस शैली का सर्वोत्तम उदाहरण है जिसे नासिर शाह खिलजी (1500-1510) के शासनकाल के दौरान माण्डु में चित्रित किया गया था। यह व्यंजनों की पुस्तक है जिसका एक भाग शिकार करने, औषधियाँ, सौंदर्य प्रसाधन, इत्र बनाने के तरीकों और उनके उपयोगों के दिशा-निर्देशों पर आधारित है।

सूफी विचारों से ओत-प्रोत कहानियों और लौरचन्दा चित्रकला इस पद्धति के उदाहरण हैं।

पाल चित्रकला शैली (Pala School of Painting)

जैन साहित्य और चित्रकला की तरह पूर्वी भारत के पाल शासकों के समय में लिखित सचित्र पाण्डुलिपियाँ (manuscripts) 11वीं और 12वीं शताब्दियों की प्रारम्भिक चित्रकला के उदाहरण हैं। पाल काल (750 से बारहवीं शताब्दी के मध्य) बौद्ध कला का अंतिम प्रमुख काल था। नालन्दा और विक्रमशिला जैसे महाविहार (विश्वविद्यालय) बौद्ध की शिक्षा और कला के महान केन्द्र थे। यहाँ की ताड़ के पत्तों पर बनीं बौद्ध धर्म से संबंधित असंख्य पांडुलिपियाँ तथा वज्रयान बौद्ध देवताओं के चित्र ताड़पत्र पर चित्रित किए गए।

इन केन्द्रों में कांस्य की मूर्तियों की ढलाई के लिए भी कार्यशालाएँ थीं। दक्षिण-पूर्वी एशिया से छात्र एवं तीर्थयात्री इन केन्द्रों या महाविहार मठों पर शिक्षा और धर्म को सीखने हेतु आए एवं अपने साथ कांस्य की आकृतियों या विस्तृत उल्लेखित पाण्डुलिपियों के नमूने ले गए। इससे पाल की कला नेपाल, तिब्बत, बर्मा, श्रीलंका और जावा आदि देशों में फैल गयी।

जैन चित्रों की कोणीय रेखाओं के विपरीत हल्के रंगों की आभा में एक गतिशील व लयात्मक रेखाएँ पाल चित्रों की प्रमुख विशेषता हैं। अजन्ता की तरह, इन मठों में पाल मूर्तिकला पद्धति और चित्रों में समांतर कला शैली का अनुभव होता है। बुद्धिमता की पूर्णता ताड़ पत्र पर निर्मित पालकालीन बौद्ध पांडुलिपि का एक श्रेष्ठ उदाहरण अष्टासहश्रिका प्रज्ञापारामिता या 'बुद्धि की प्रवीणता' है जो आठ हजार पंक्तियों में लिखी गई है।